20/5/19
M

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper :	**9117**	**IC**
Unique Paper Code	: 12051202	
Name of the Paper	: Hindi Kavita (Reetikaleen Kavya)	
Name of the Course	: **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**	
Semester	: II	
Duration : 3 Hours	Maximum Marks : 75	

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव की अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रहीम के दोहों की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

2. 'बिहारी ने अपने दोहों में 'गागर में सागर भर दिया है।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य में निहित शिल्प-सौन्दर्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

P.T.O.

munotes.in

3. घनानंद की कविता के भाव-पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

घनानंद की काव्य-कला की विवेचना कीजिए। (12)

4. भूषण के भाषिक वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यक्त आदर्शों की चर्चा कीजिए।

(12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) राजत रंच न दोष युत कविता बनिता मित्र।
बुंदक हाला परत ज्यों गंगाघट अपवित्र।
जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुबृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता बनिता मित्त।

अथवा

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।
रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँके तीन।। (8)

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परैं, स्यामु हरित-दुति होई।

रनित भृंग-घंटावली, झरति दान मधु-नीरु।
मंद-मंद आवतु चल्यौ, कुंजरु कुञ्ज-समीरु।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं-ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन तिहारियै।
एक ही जीवन हुतौ सु तौ बार्‌यौ सुजान संकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहैं घनआनंद बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

(7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्‌घाटित कीजिए :

(क) बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय, ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप-वृद्ध, कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।
भावी, भूत, बर्तमान जगत बखानत है, केशोदास क्योंहू न बखानी काहू पै गई।
बणै पति चारि मुख, पूत बणै पाँचमुख, नाती बणै षटमुख तदपि नई नई।

(भाषा-सौंदर्य)

(ख) बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।

(भाव-सौंदर्य)

(ग) साईं बैर न कीजिए, गुरु, पंडित, कवि, यार
बेटा, बनिता, पँवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राजमंत्री जो होई
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई
कह गिरिधर कविराय, युगन ते यह चलि आई
इन तेरह सों तरह दिए, बनि आवै साईं॥

(नीति-सौंदर्य)

(घ) पहले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनंद आपने चातिक कों गुन-बांधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू॥

(रस-व्यंजना)

(6+6=12)